आज़ादी का अमृत महोत्सव

अयोध्या शोध संस्थान

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

'रामायण' प्रदर्शनी

इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज में

वानर सखाओं के साथ श्रीराम एवं लक्ष्मण

श्रृंगवेरपुर, प्रयागराज (5वीं शताब्दी ई0)

भारतीय कलाओं में रामांकन

मृदा–फलक में एक दूसरे की ओर अभिमुख
जटा–जूटधारी श्रीराम–लक्ष्मण (पांचवी शती ई०)
भीतरगाँव, कानपुर, उत्तर प्रदेश
सम्प्रति– रॉफेल संग्रहालय, अमेरिका में प्रदर्शित।

सौजन्य:
प्रो० सीताराम दुबे
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दू वि०वि०

मृदा–फलक
ई०पू० द्वितीय शती
जिला–कौशाम्बी
उत्तर प्रदेश

आभूषणों से सुसज्जित सीता को उठा कर ले जाता याचक–रूप रावण। सीता अपने बचाव में उससे संघर्ष करती दिखाई देती हैं।

प्रस्तर–फलक, लगभग सातवीं शती ई०, नचना कुठारा, जिला–पन्ना, मध्य प्रदेश के स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित।

फल–फूल से सज्जित वृक्षों से युक्त पंचवटी की कुटिया में वस्त्राभूषणों से अलंकृत सीता द्वारा छद्म वेश–भूषा धारी याचक रावण को भिक्षा देने का आकर्षक अंकन।

रामायण वर्णित कथानक के अनुसार इस शर्त पर, कि बालि और सुग्रीव जब परस्पर युद्ध कर रहें होंगे तो बालि पर सर–संधान कर राम उसे मार देंगे, सुग्रीव–बालि को ललकार कर युद्ध करता है; किन्तु युद्धरत एक जैसे दिखाई दे रहें दोनों में से कौन बालि है? न पहचान पाने के कारण राम–लक्ष्मण दोनों के असमंजस में पड़ जाने का स्वाभाविक अंकन।

प्रस्तर–फलक, लगभल सातवीं शती ई0, नचना कुठारा, जिला–पन्ना, मध्य प्रदेश के स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित।

परस्पर युद्धरत बालि और सुग्रीव तथा राम–लक्ष्मण का आकर्षक अंकन। इसमें पहचान के लिए सुग्रीव को पहनाई गई माला के कारण निश्चिन्त हो सर–संधान कर बालि का वध करते राम का प्रदर्शन।

प्रस्तर–फलक, लगभग सातवीं शती ई०, नचना कुठारा, जिला–पन्ना, मध्य प्रदेश के स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित।

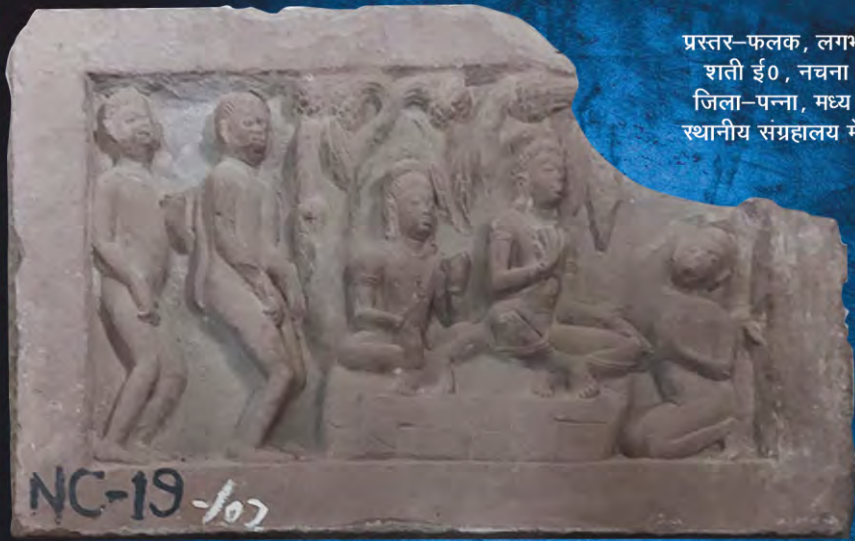

प्रस्तर–फलक, लगभग सातवीं शती ई0, नचना कुठारा, जिला–पन्ना, मध्य प्रदेश के स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित।

खण्डित फलक पर मंचासीन राम–लक्ष्मण और उनके सम्मुख प्रणति भाव में बैठे हनुमान। पीछे दो अन्य बन्दर भी अंकित हैं।

दीवाल की भित्ति, दशवीं शती ई० का अंतिम चरण, यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर के रूप में विख्यात, खजुराहो, जिला–छतरपुर, मध्य प्रदेश।

चन्देल शासक धंग के द्वारा निर्मित कराए गए कन्दरिया महादेव के मन्दिर की भित्ति पर युद्धरत बालि और सुग्रीव तथा वृक्ष की ओट से बालि पर सर–संधान करते राम।

स्थापत्यगत प्रस्तर–फलक, आठवीं शती ई०,
मल्हार, जिला–बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

स्तम्भ–सदृश पट्टिका की बाईं ओर के आले में बालि, सुग्रीव के बीच मल्लयुद्ध। राम के द्वारा मारे गए भूमिसात बालि के ऊपर विलाप करती तारा। पहचान के लिए पहनाई गई माला के साथ यहां सुग्रीव भी उपस्थित हैं।

स्थापत्यगत प्रस्तर–फलक, आठवीं शती ई0 , मल्हार, जिला–बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

बहुअलंकृत स्तम्भ पर अंकित दो आलों में से एक पर बालि के वध पर विलाप करती रोमा और तारा तथा दूसरे आले में बन्दर– समूह का प्रदर्शन है।

प्रस्तर–फलक, ग्यारहवीं शती ई0
मल्हार, जिला–बिलासपुर
छत्तीसगढ़।

धनुर्धारी स्थानक राम

मन्दिर–भित्ति, ग्यारहवीं शती ई० , जाँजगीर, जिला–जाँजगीर–चाँपा, छत्तीसगढ़।

विष्णु–मन्दिर की भित्ति पर अंकित पंचवटी में सीता, राम, लक्ष्मण का भव्य अंकन। सीता के संकेत पर स्वर्ण–मृग रूप मारीच पर सर–संधान करते राम का स्वाभाविक अंकन।

मन्दिर–भित्ति, ग्यारहवीं शती ई०,
जाँजगीर, जिला–जाँजगीर–चाँपा, छत्तीसगढ़।

विष्णु–मन्दिर की भित्ति की अलंकृत पट्टिका पर अंकित पंचवटी में विद्यमान वस्त्र–आभूषणों से सुसज्जित सीता, याचक रूप लंकापति रावण को भिक्षा देती हुई। पुनः वृक्ष के बगल में सीता को गोद में उठाकर ले जाते रावण का प्रदर्शन है। यहां दोनों दृश्यों में प्रदर्शित रावण की शिरोभूषा में अन्तर है जहां वह पहले में मुकुटधारी है वहीं दूसरे में जटा–जूटधारी है।

मन्दिर–भित्ति, दशवीं–ग्यारहवीं शती ई०, नागदा, जिला–उदयपुर, राजस्थान।

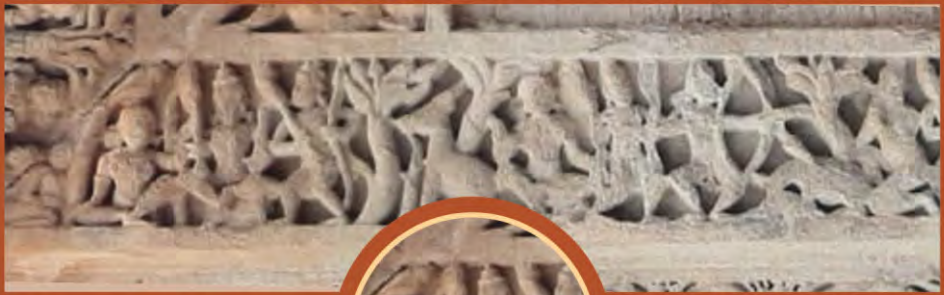

मन्दिर–भित्ति पर अंकित पट्टिका में रामायण वर्णित कथानकों का अंकन। एक में सीता स्वर्ण–मृग की ओर राम को संकेत करती और दूसरे में स्वर्ण–मृग रूप मारीच पर सर–संधान करते राम का आकर्षक प्रदर्शन।

मन्दिर–भित्ति, ग्यारहवीं शती ई०, घटियारी, जिला–राजनादगाँव, छत्तीसगढ़
सम्प्रति राजनादगाँव संग्रहालय में प्रदर्शित।

शिव मन्दिर की भित्ति पर फल–पुष्प युक्त वृक्ष से सज्जित अशोक–वाटिका में सीता और हनुमान। इस दृश्य में लंका–दहन के पश्चात् राम के पास लौटने के क्रम में सीता से हनुमान के मिलने और सीता द्वारा राम को देने के लिए अपना आभूषण प्रदान करने का अंकन है।

मन्दिर–भित्ति, बारहवीं शती ई० , अमृतपुर, जिला–चिकमंगलूर, कर्नाटक।

अमृतेश्वर मन्दिर की भित्ति की अलंकृत पट्टिका पर स्थारूढ़ राम–रावण के मध्य युद्ध का आकर्षक अंकन है। इसमें दोनों पक्षों के अनेक पदाति योद्धाओं को भी प्रदर्शित किया गया है।

मन्दिर–भित्ति, बारहवीं शती ई० , अमृतपुर, जिला–चिकमंगलूर, कर्नाटक।

होयसल शासक वीरबल्लाल के समय निर्मित अमृतेश्वर मन्दिर के अलंकृत भित्ति–फलक में सीता, राम एवं लक्ष्मण का आकर्षक प्रदर्शन। इसमें सीता द्वारा हाथ उठाकर स्वर्ण–मृग रूप मारीच की ओर राम को संकेत करती हुई।

मन्दिर–भित्ति, बारहवीं शती ई०, अमृतपुर, जिला–चिकमंगलूर, कर्नाटक।

अमृतेश्वर मन्दिर की भित्ति के अलंकृत फलक पर बालि–वध का स्वाभाविक अंकन। इसमें सप्त ताड़ वृक्षों की ओट से अदृश्य बालि पर सर–संधान करते राम का अंकन है। अंतिम वृक्ष के तने से बाण को निकलते दिखाया गया है और वृक्ष के नीचे रहने वाले सर्प का भी अंकन है। ऊपर अंकित लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान को इस दृश्य का आनन्द लेते हुए दिखाया गया है।

मन्दिर–भित्ति, बारहवीं शती ई0
अमृतपुर, जिला–चिकमंगलूर, कर्नाटक।

अमृतेश्वर मन्दिर की भित्ति की पट्टिका में पुष्प बल्लरियों से सज्जित अशोक–वाटिका में रामायण वर्णित उस दृश्य का अंकन है, जिसमें राक्षसियों से घिरी सीता को विचलित करने के लिए रावण सैनिक से राम–लक्ष्मण के छद्म कटे सिर को भेजता है।

प्रस्तर–फलक, लगभग चौथी–पांचवीं शती ई०,
राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में प्रदर्शित।

लता–बल्लरियों से सज्जित ललाट बिम्ब के नीचे रामायण वर्णित राम, सीता, लक्ष्मण एवं सूर्पणखा का अंकन। इसमें दाएं हाथ से खड्ग उठाए तथा बाएं हाथ से सूर्पणखा का जूड़ा पकड़कर लक्ष्मण द्वारा उसकी नाक काटने का स्वाभाविक प्रदर्शन है। यह अंकन गुप्तकालीन शिल्प कला का आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मृदा–फलक, ई0पू0 प्रथम शती से प्रथम शती ई0, चन्द्रकेतुगढ़, जिला–उत्तर चौबीस परगना, पश्चिम बंगाल।

आभूषणों से सुसज्जित सीता को पंचवटी से उठा कर ले जाता राक्षस रूप रावण। वह सीता को कुछ इस प्रकार पकड़े है जिसमें सीता असहाय हो गई सी दिखाई देती हैं। बाई ओर वृक्ष से झाँकता बन्दर और बाई ओर नीचे मयूर का अंकन।

मृदा–फलक, तीसरी–चौथी शती ई०, नचरा खेड़ा,
जिला–जिन्द, हरियाणा।

शक वेश–भूषाधारी दाएं हाथ में धनुष लिए तथा बाएं हाथ से वरद मुद्रा में स्थानक श्रीराम। उनके बाएं स्कन्ध भाग के पीछे बाणयुक्त तर्कस भी प्रदर्शित है।

मृदा–फलक, चौथी शती ई0, नचराखेड़ा,
जिला–जीन्द, हरियाणा

खण्डित फलक पर सीता–राम का अंकन। इसमें सीता राम को स्वर्ण मृग की ओर संकेत करती प्रदर्शित हैं। राम को बाएं हाथ में बाण और दाएं हाथ में धनुष लिए दिखाया गया है।

मन्दिर–भित्ति, दशवीं–ग्यारहवीं शती ई० , नागदा,
जिला–उदयपुर, राजस्थान।

मन्दिर की भित्ति के एक अलंकृत आले में बंदर समूह के मध्य युद्धरत बालि और सुग्रीव और उनमें से बालि पर सर–संधान करते राम का आकर्षक अंकन।

सरगुजा के रामगढ़ की सीता बेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा गुफाएं तथा प्राचीन प्रतिमाएं

बिलासपुर अम्बिकापुर मार्गपर स्थित उदयपुर से चार किमी की दूरी पर रामगिरि पर्वतस्थितहै। इसे स्थानीय लोग रामगढ कहते हैं जहां पर कई गुफाएं हैं। स्थानीय मान्यता है कि भगवान राम ने वन गमन के समय यहाँ चौमासा व्यतीत किया था। मुख्य गुफा का नाम सीता बेंगरा है तथा इसके पार्श्व में स्थित गुफा को लक्ष्मण बेंगरा कहा जाता हे। इन गुफाओं को भगवान राम, सीता जी एवं लक्ष्मण जी ने अपना निवास बनाया था। गुफा में स्थित ब्राह्मी शिलालेख के आधार पर विद्वान इसे दूसरी शताब्दी ईस्वीं का मानते हैं।

फणिकेश्वर महादेव फिंगेश्वर, जिला गरियाबंद

फणिकेश्वर महादेव फिंगेश्वर कस्बे में रायपुर से राजिम होते हुए महासमुंद मार्ग पर 63 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ रायपुर जिले की प्रमुख ज़मींदारी भीरहीहै। सुखा नदी किनारे पंचदेव परिसर में पूर्वाभिमुख तेरहवीं शताब्दी का फणिकेश्वर महादेव मंदिर स्थित हैं। इसकी दीवारों पर दो परतों में प्रस्तर निर्मित प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। जिनमें अहिल्या उद्धार, राम द्वारा हनुमान को मुद्रिका देना, हनुमान द्वारा शिवार्चना आदि दृश्यों को प्रदर्शित किया गया है।

फड़ चित्र शैली में

रामकथा

राजस्थान के भीलवाड़ा क्षेत्र में कपड़े की पृष्ठभूमि पर लोक देवता देवनारायण एवं पाबूजी आदि के जीवन पर आधारित एवं उनकी शौर्य गाथाओं पर बनाए जाने वाले पारम्परिक अनुष्ठानिक कुंडलित चित्र, पड़/फड़ चित्र कहलाते हैं। फड़ केवल एक चित्र भर नहीं माना जाता, यह अपने आप में देव स्वरूप है। इसलिए इसे बनाने वाले चित्रकार और बाँचने वाले भोपा, दोनों ही इसे पवित्र मानते हैं। भोपा पूरी फड़ को साक्षात् देवता मानते हैं, वे इसे प्रति दिन धूप–अगरबत्ती लगाते हैं और इसे घर में पवित्र स्थान पर रखते हैं। वे एक बार इसे खोलने के बाद बिना बाँचे बंद नहीं करते। फड़ के पुराने हो जाने पर उसे इधर–उधर नहीं फेंका जाता बल्कि पुष्कर ले जाकर पवित्र सरोवर में विसर्जित किया जाता है।

सौजन्य :

क्षेत्रीय निदेशक
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द
क्षेत्रीय इकाई, वड़ोदरा, गुजरात

Sage Valmiki sees the hunter killing the female Krauncha

Boon by Brahma

Putreshti Yagnya for a son

राज्ञः पुत्रा महात्मानश्चत्वारोज ज्ञिरे पृथक्। गुणवन्तोऽनुरूपाश्चरुच्या
प्रोष्ठपदोपमाः॥ १६॥ जगुः कलं च गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः। देवदु
न्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिश्च खात्पतत्॥ १७॥

Birth of Ram

Birth of Sita

Killing of asuras in the rishi ashram

Killing of Tadka

Ahalya moksha

Hara dhanu bhangam

Sita swayamvar

राजस्थान की नाथद्वारा चित्रांकन शैली में

रामकथा

राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित नाथद्वारा शहर इस चित्र शैली का प्रतिनिधित्व करता है। यह शैली मेवाड़ लघु चित्र शैली की एक उपशैली है, जिसे 17वीं–18वीं शताब्दी के लघु चित्रों में एक महत्वपूर्ण स्कूल के रूप में देखा गया।

नाथद्वारा शैली में पिछवाई सबसे लोकप्रिय शैली है जिसमें प्रमुख रूप से श्रीकृष्ण की अलग–अलग भाव–भंगिमाओं तथा नृत्य की विभिन्न मुद्राओं को कपड़े या कागज़ पर आमतौर पर पाए जाने वाले परिधान में दिखाया जाता है।

कला की यह परम्परा पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती गयी जिसमें श्रीकृष्ण के प्रति भक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति है। कथा सुनाने की परम्परा में श्रीकृष्ण के अतिरिक्त कुछ कलाकारों ने रामकथा को भी प्रभावी ढंग से चित्रित किया है।

सौजन्य :
आदिवासी लोक कला एवं
बोली विकास अकादमी, भोपाल (म0प्र0)

गुरुकुल में निषाद पुत्र गुहय का दशरथ पुत्रों के साथ
गुरु वशिष्ठ से शिक्षा ग्रहण करना।

गुहय का श्रीराम-लक्ष्मण एवं अन्य भ्राताओं सहित वन में भ्रमण करना
तथा उनकी ओर आते हुए बाघ की ओर गुहय का संकेत करना।

श्रीराम का बाघ से संघर्ष, लक्ष्मण द्वारा रक्षार्थ धनुष उठाना,
किन्तु श्रीराम द्वारा ऐसा न करने के लिए कहना।

राजा दशरथ का वन में आना।
सभी पुत्रों को सकुशल देखकर प्रसन्न होना और गुह्य को
अपने पाँचवे पुत्र के रूप में स्वीकार करना।

श्रीराम-सीता व लक्ष्मण का अयोध्या से वनवास हेतु प्रस्थान।
नगरवासियों का भारी मन से उनको विदा करना।

श्रृंगवेरपुर पहुँचकर श्रीराम-सीता एवं
लक्ष्मण का गंगा को प्रणाम करना।

निषादराज का कबीलेवासियों सहित
श्रीराम से भेंट करना।

निषादराज का श्रीराम से
अपने कबीले में चलने का आग्रह करना।

श्रीराम का आर्य सुमन्त को अयोध्या वापस जाने के लिए विदा करना।

देवगणों का श्रीराम-सीता एवं लक्ष्मण पर पुष्प वर्षा करना।
तीनों का देवताओं को प्रणाम करना।

निषादराज एवं परिजनों द्वारा श्रीराम एवं सीता के विश्राम हेतु कुश का आसन तैयार करना।

निषादराज सहित श्रीराम-लक्ष्मण, सीता का गंगा तट पर आना। केवट का पार उतारने के लिए इंकार करना।

निषादराज का केवट से गंगा पार कराने का आग्रह करना।

श्रीराम के आग्रह पर भी
केवट का गंगा पार उतारने के लिए इंकार करना।

नाव पर चढ़ाने से पूर्व केवट का श्रीराम के चरण पखारना।

श्रीराम के रूप में साक्षात् विष्णु के चरण पखारने का सौभाग्य पाकर केवट का धन्यता के भाव से भरना।

श्रीराम के चरण पखारने के पश्चात्
केवट का अपने पूर्वजों को स्मरण करना एवं उनका तर्पण देना।

केवट का श्रीराम को अपने कंधे पर बैठा कर नाव तक ले जाना।

श्रीराम-सीता, लक्ष्मण एवं निषादराज का नाव में सवार होना।

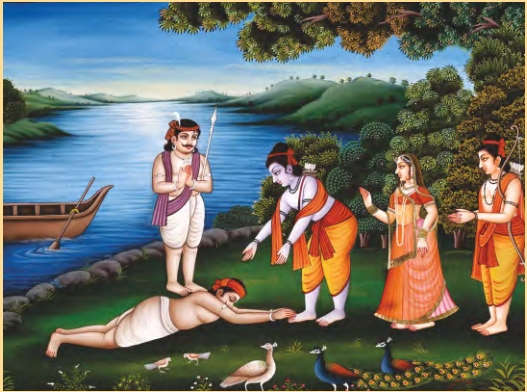

श्रीराम को गंगा पार कराने के पश्चात् केवट का दण्डवत् प्रणाम करना।

केवट का प्रभु भक्ति में लीन होना।

श्रीराम द्वारा केवट को
गंगा पार कराने की उतराई के रूप में मुद्रिका भेंट करना।
केवट द्वारा लेने से इंकार करना।

श्रीराम का केवट को वस्त्र एवं मुद्रिका भेंट करना।

माँ गंगा का श्रीराम एवं केवट से संवाद सुनना।
श्रीराम का केवट से विदा लेना।

श्रीराम का राज्याभिषेक

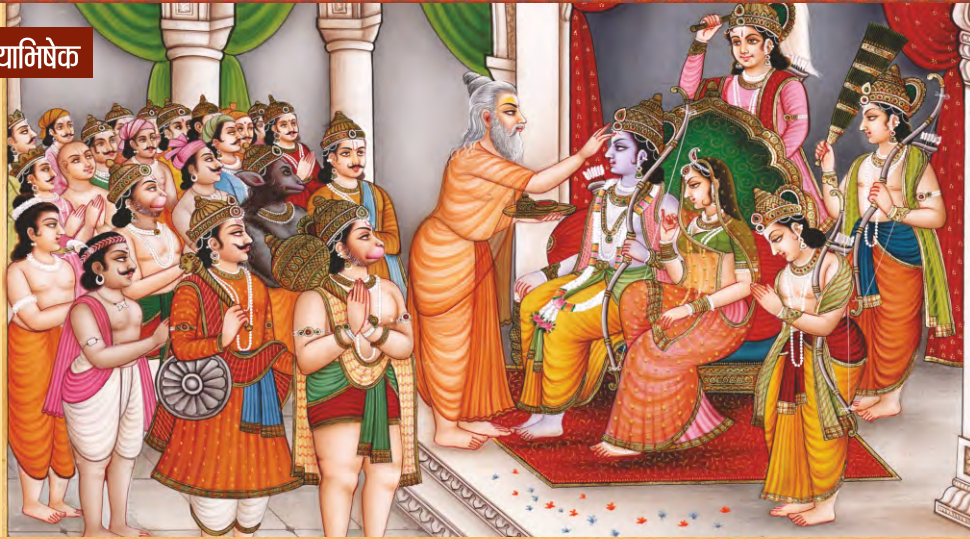

जन-जन के राम

रामायण कॉन्क्लेव

श्रृंगवेरपुर

15–16 फरवरी, 2023

रामायण मेला परिसर, श्रृंगवेरपुर धाम, प्रयागराज

अयोध्या शोध संस्थान
संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश
द्वारा आयोजित

'रामायण' चित्र प्रदर्शनी